

गव

श्रीगणेशाय नमः ॥ ओ नमो देवसहजनिज ॥ तू चतुर्भुज उग्रभुज ॥ तू विद्यात्मा विश्व  
भुज गुरुत्वे तु जगोरव ॥ १ ॥ निजश्रीषाची भावार्था ॥ तौ गुरुनाम अभयदाता ॥ अभयदेवो नित्यता  
भवभयवधा निवारिणी ॥ २ ॥ निवारिनि जन्ममरण ॥ आपण्या भेटसी आपण ॥ ते का गुरु श्री ष नामसंपू  
र्ण ॥ तुसे एकपण आभासे ॥ ३ ॥ ते एकपण पाहाता दिटी ॥ एका जनार्दन निपडे मिटि ॥ गुरुत्वे कोरे सकळ सृष्टी ॥  
अनदपुष्टी जगनादे ॥ ४ ॥ तौ स्वानदे कचिद्वन ॥ जगद्गुरु जनार्दन ॥ एका जनार्दन कारण ॥ एकी एकपण दृढ के  
ले ॥ ५ ॥ दृढकेले एकपण ॥ ते ही सद्गुरु सात्मा पूर्ण ॥ तेथे खुटले मितुपण ॥ एका जनार्दन एकवे ॥ ६ ॥ यापरि एका  
की एकता ॥ एका जनार्दनिक वित्तकेला ॥ तौ एकादशाचा पावला ॥ सहजलीला एकवे बोध ॥ ७ ॥ या एकत्वाचि सह  
ज स्थिति ॥ पावला पुरुरवाभुपति ॥ दृढ अनुताप विरक्ती ॥ भगद्वक्तिसहसंगे ॥ ८ ॥ हे सविसावे आध्याइजाण ॥ स्वमु  
खे बोलीला श्री कृष्ण ॥ सत्संगे भेद्वजन ॥ तेणे वे राग्य पूर्ण साधका ॥ ९ ॥ नकरीता भगवद्वक्ती ॥ कदानुपजे विरक्ती ॥ विर  
क्तीविण भगव हाती ॥ नैके कंलाति साधका ॥ १० ॥ ऐसे बोलीला श्री कृष्ण ॥ तेची स्वये जीविधस्त ॥ भगवद्वक्ति पूजा वि  
धान श्रीयोगजाणपुसत ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ उद्धव उवाच ॥ क्रियोगं समाचक्ष्व भवं शराधनं प्रभो ॥ यस्मात्तं यथाचं  
ते साधनाः सात्वतर्षभ ॥ १ ॥ टीका ॥ निज प्रकृतानुग्रहार्थं सत्समूर्ति तु अनंत तुसे निज भक्तजे सात्वत  
तेतू पूजीतकोणे विधी ॥ १२ ॥ तेसाधुंचे आराधन ॥ तुसे श्रीयोगनीज पूजन ॥ कृपाकरूनिया आपण ॥ प्रजसपूर्णसं  
गावे ॥ १३ ॥ प्रणसी आणिकोत पुसावे ॥ हे मासे नि सर्वधानके ॥ तुजे सांडु सिदुरिजावे ॥ हे तगज ही जीवे साहावे  
ना ॥ १४ ॥ मीतु सादास जीवे भावे ॥ तुसे नि प्रभूत्व गोरवे ॥ मीकली काळा नागेवे ॥ कृपा प्रभवे तुसे नि ॥ १५ ॥ तुक  
पाळु कृपायुक्त ॥ कृपेसी होसी भक्ताचा भक्त ॥ यातु सामीचरणं किन ॥ सलगी गुह्यार्थ स्वये पुसे ॥ १६ ॥ इतका  
करुनि उगसादर ॥ कापूससी पूज्या प्रकार ॥ हाश्रेष्टी श्रेष्टीकेला विचार ॥ तौ निजनिर्धार आवधारि ॥ १७ ॥



॥ श्रीकृ ॥ एतत्कर्मरूपज्ञातं कर्मबंधविमोचनं ॥ भक्तार्थं च ॥  
॥ नुरता यज्ञविभवयनं च ॥ ५ ॥ विष्णु ॥

जनपूर्ण स्त्रियाशुद्रजनउद्धरिते ॥२८॥ कर्मागुतले उन्नतो तम ॥ भजनिउद्धरते अधमाधम ॥ भजनेस  
र्वासहीसुगम ॥ भजनेस्वधर्मसार्थक ॥२९॥ भजनमहीमानिशीम ॥ अधमापदविउता मातोम ॥ ते अधमा  
धमस्वयहोति ॥३०॥ सर्ववर्णआणिआश्रम ॥ भगवद्भजने गतिउत्तम ॥ हेभक्तीचेनिजवर्म ॥ भक्तनिष्काम  
जाणति ॥३१॥ करुनियाभगवद्भक्ति ॥ स्वयेभगवद्रुपहोति ॥ यात्वागीभक्ताते श्रीपति ॥ उतिप्रितिमानितु  
॥३२॥ तुसेभजनपूजनकरिता ॥ तुनिजभक्तासीहोसीत्राता ॥ तूचिभक्तासीहोसीसन्मानदाता ॥ तेपूजनकथा  
मजसांग ॥३३॥ कर्मबनाभिनारायणा ॥ भक्तिविश्रामकर्मकनयना ॥ कर्मकालयाकर्मकानयना ॥ विनति श्री  
कृष्णअवधारी ॥३४॥ तुवापाहील्याकृपादही ॥ ~~तुवापाहील्याकृपादही~~ तकाकपेउटाउदि ॥ सुदतिकर्मवधाच्या  
गादि ॥ स्वानदपुष्टीनिजभक्ता ॥३५॥ जेविघृतचेकटिनपण ॥ क्षणेविरविसूर्यकीर्ण ॥ तेविकर्माबंधानिर्द  
न ॥ तुसेकृपावलोकनकरिकृष्ण ॥३६॥ कार्सेंधवाचामहागीरि ॥ जेवि विरेसीधुमासारि ॥ तेविकर्म  
वधाबोहरि ॥ तुसीकृपाकरीश्रीकृष्ण ॥३७॥ तुसीशांतीयाकृपादही ॥ कर्माकर्मासीपडेतुमी ॥ जेविसूर्यो  
रयापारि ॥ नातुडेभेटिखयोत ॥३८॥ तमेदारीतिखयोतकोडी ॥ तेविअक्षानीकर्मचिआवडी ॥ तुसी  
कृपाजोउल्हाजोडि ॥ जातिवापुडीविसरोनि ॥३९॥ ऐसीयानिष्कर्मकृपायुक्त ॥ तुसेविरतिनिजभक्त ॥  
जेकाविषईविरक्त ॥ सदाअनुरक्तहरिचरणी ॥४०॥ तेपूर्णकपेचेअयतन ॥ तुसेभजनपूजनविधान ॥  
तेमजसांगकृपाकरून ॥ मीअतिदिनपेतुसे ॥४१॥ अणसीतुजहाआधीकारनाही ॥ परिमीशरणतु  
झापारि ॥ शरणागताचितुशारागी ॥ उपेक्षानाहीकृष्ण ॥४२॥ तुवाउद्धरिते पशुगीधगजासी ॥ गणी

के तारित्ते कुरने सी ॥ तेचि कृपा करि आलासी ॥ हे पीके सी कृपा कुवा ॥ ४३ ॥ अणसी अष्टा श्री वडि स  
 ता सखी ॥ मजचि पुसायाची अद्दामो रि ॥ कैसे नी पा वाळ ती पो रि ॥ ऐकते गो रि संगे न ॥ ४४ ॥ अष्टा ज गा चा  
 कती होय ॥ तो ही विसरता निजात्म सोय ॥ तो तुझा पोराये उ नि पा हे ॥ निज ज्ञान ला हे तुझे नि ॥ ४५ ॥ निव  
 पायवणी वा हे माथा ॥ तुझे नाम सदा जपता ॥ तुझे रूपे खवत त्वता ॥ तो ही निजात्म ता पावता ॥ ४६ ॥ अष्टा  
 गीतु इश्वराचा ईश्वर ॥ नियंसा नियता सर्वेश्वर ॥ विन्वी विस्व विन्वभंर ॥ विन्वे श्वर तु कृष्ण ॥ ४७ ॥ या परि  
 तु ज्ञान निधी ॥ पूर्ण बोधाचा उदधी ॥ जेणे होय निजात्म सिद्धी ॥ ते पूजा विधी मज सांग ॥ ४८ ॥ ऐसा भक्त वच  
 ने तो सतोषला ॥ पूर्ण निज बोध देवला ॥ निजात्म रूपे कक वळला ॥ काय बोलीला श्री कृष्ण ॥ ४९ ॥ श्लोक ॥  
 ॥ श्री भगवानुच ॥ न ह्यतो नंत पश्यस्य कर्म कांडस्य चोद्भव ॥ संशिलं वर्णयिष्यामि यथा वदनु पूर्व ज्ञाः ॥ ६ ॥ टीका  
 जाचे ऐकता वचन ॥ वेद वाक्या पडे मोन ॥ जाचि करिता उगट वण ॥ मनपण मन स्वये मुके ॥ ५० ॥  
 जे वेदार्थ प्रकाशक ॥ जो ओंकाचा अदि अर्क ॥ तो उद्धवासी यदुनायक ॥ स्वमुखे देखवोळत ॥ ५१ ॥ अगमनि मोक्त  
 प्रकार ॥ मासी पूविधी सविस्तर ॥ सांगता उंनत उगपा ॥ नकळे पार अष्टादिका ॥ ५२ ॥ उद्धवा ऐकृपा तत्वता  
 मोदेकारि देवज्ञात्वो वक्ता ॥ तरि पूजा विधान कथा ॥ समूळ सर्वथान सांगवे ॥ ५३ ॥ जही साते अतिसज्ञान ॥  
 तही पूज्या विधी विधान ॥ सांगवया समर्थपण ॥ सर्वथा जाण असेना ॥ ५४ ॥ एव पूर्वीक्त प्रकार ॥ अगमनि  
 गमनि जसार ॥ निवडुनि संक्षेपाकार ॥ तुजमी साचार सांगेन ॥ ५५ ॥ पूजा विधी निजसार ॥ त्रिविध विधा  
 न त्रिप्रकार ॥ ऐक सांचा ही विचार ॥ विधिविचार विभागे ॥ ५६ ॥ श्लोक ॥ वेदिक कृतां त्रिको मिथ  
 वेदि मंत्र वेदिचे उगम ॥ वेदोक्त मासी पूजा सांग ॥ या नावगा तत्र मार्ग ॥ अगम प्रयोग तो ऐक ॥ ५७ ॥ अग  
 मंत्र उगमची उंग ॥ मासी अगमोक्त पूजा सांग ॥ या नाव वैदिक मार्ग ॥ मी प्रसंगती ऐक ॥ ५८ ॥ वेदिचे

चि

मंत्र तं त्रिचोऽंग ॥ एवं मीश्री त विभाग ॥ मासी पूजानि कजेसांग ॥ मिस्र मार्ग यानाव ॥ ५९ ॥ हे त्रिविधिविधि  
 पूजासांग ॥ तो जाण मासा त्रिविध याग ॥ यिणे मी संतोषे श्रीरंग ॥ पार्वदे शी सांग परिवार ॥ ६० ॥ ऐसे मासे त्रिविध भ  
 जने ॥ जेथे मी शी श्रद्धा पूर्ण ॥ या विधिक रिता पूजन ॥ मज तू सी समान भावार्थ ॥ ६१ ॥ भावार्थ जे मासे पूजन तेणे मी  
 संतुष्ट जनार्दन ॥ हो अंगे मोक्त यज्ञ सपूर्ण ॥ त्रिविध लक्षण सं म साम्य ॥ ६२ ॥ वेदिका दिक् त्रिविध गति ॥ पूजा ता तस मी श्री  
 पति ॥ पूजा काराचि स्थीति ॥ एक तु ज प्रति सांगेन ॥ ६३ ॥ श्लोक ॥ यदा स्वनिगमो नोक्तं द्विजैः त्रिप्रोप्य पूरुषः ॥ य  
 था यजेत मां श्रद्धा श्रद्धया वं निवो धमे ॥ ६४ ॥ टीका ॥ द्विज न्मे जे ति की ॥ याचे अधिकार लक्षण ॥ गर्भदि  
 मी उपनयन ॥ ते अधिकार पूर्ण क्रावण ॥ ६५ ॥ श्रद्धा याचा अधिकार शुद्ध ॥ वारा वर्षे त वंध ॥ सोळा वर्षे प्रसीद्ध ॥ वृत्त  
 वंध वैशासी ॥ ६६ ॥ गायत्री उपदेशा वाकोन ॥ दुसरे जन्म उपनयन ॥ यानाव सावत्र जन्म जाण ॥ द्विज न्मे श्री वैष्णवे शी  
 क्त विधि ॥ ६७ ॥ वेदांती अधिकार लक्षण ॥ यानाव उद्धवा जाण ॥ आता मासी पूजा विधि विधान ॥ एक सपूर्ण निज भक्ता ॥  
 ॥ ६८ ॥ श्लोक ॥ अर्चायां स्थिते गौ वा सूर्ये वा उरु हृदि दिजे ॥ इत्यण भक्ति युक्तो ऽर्च्ये स्य गुरुं माम् मायया ॥ ६९ ॥  
 ॥ टीका ॥ अर्चायां मासे पूजा वया अधिष्ठान ॥ अष्टविध पूजा स्थान ॥ याचे ही निज लक्षण ॥ उण सुण तेरे क ॥ ६९ ॥  
 श्रीय प्रतिमा पूजा स्थान ॥ हे मासे प्रथम अधिष्ठान ॥ का पृथ्वी त की स्थिति ती जाण ॥ पूजा स्थान दुसरे ॥ ७० ॥ अग्नीचे ते  
 ज स्वरूप मासे ॥ ते पूजा स्थान जाण तिजे ॥ सूर्य मंडळी जे पूजा किजे ॥ ते चौथे मासे पूजा स्थान ॥ ७१ ॥ उदकिजे मासे  
 जे पूजन ॥ ते पाचवे पूजा स्थान ॥ हर्दरे मासे आवाहन ॥ ते पूजा स्थान साहावे ॥ ७२ ॥ शांती ग्राम केवल अचतन ॥ ब्राह्म  
 ण मासे स्वरूपे सत्वे तन ॥ ते अखंड ल ब्रह्म पूर्ण ॥ पूजा सन्मान काडी पचार ॥ ७३ ॥ ब्राह्मणी जाची ब्रह्म भावो ॥ तो  
 परम भाग्याचा स्वयं ममेवो ॥ ब्रह्मादिका पूज्य पाहा हो ॥ मिदेवा दिदेवो स्वयं वेदि ॥ ७४ ॥ सकळ पूजा माजी जाण ॥ मुख्य  
 वे पूज्य ब्राह्मण ॥ ते सातवे पूजा स्थान ॥ उद्धवा जाण अति श्रेष्ठ ॥ ७५ ॥ सकळ पूज्या पूज्यत्व पूज्या ॥ जीवरि द्या

जे

वरिष्ठवोजा ॥ जो नवे ठाता उनात्मा मासा ॥ वय्यगुरु राजा स्थिती ॥ ७५ ॥ सद्भावे ज्याचे धरिता चरण ॥ मी करवा  
वेष्टपूर्ण ॥ ज्याचे सद्भावे करिता स्मरण ॥ मिपर मात्मा जाण उच्छ्रित ॥ ७६ ॥ सद्गुरुचे नाम स्मरण ॥ निह्की भव भय  
दारुण ॥ निवारोनि जन्म मरण ॥ विणविसपूर्ण निज बोधे ॥ ७७ ॥ तो मी परमात्मो नारायण ॥ गुरु रूपे प्रगटो नि जाण ॥  
परब्रह्माचे पूर्ण पण ॥ शीषद्वारा सपूर्ण प्रकाशक ॥ ७८ ॥ ब्रह्माचे परब्रह्म पण ॥ सद्गुरुचे नि सत्य जाण ॥ यकडे अगाध  
महीमान ॥ अति गहन गुरुचे ॥ ७९ ॥ एवं सद्गुरु ज्ञान घन ॥ जो हरिहरा वेंच पूर्ण ॥ जो मासे सद्रूप आधि स्थान ॥ हे मासे  
पूज्या स्थान आठवे ॥ ८० ॥ जे आठवे पूज्या स्थान ॥ ते अंखड अठवे उगट वन ॥ तेणे उगटवे सांग सपूर्ण ॥ उद्धवा  
जाण मी पूजिले ॥ ८१ ॥ एवं उगट ही पूज्या स्थाने ॥ तुज सांगीत तै सुख क्षणे ॥ तेथ ती पूजे चि तक्षणे ॥ तिही भिन्न  
पणे सांगे मी ॥ ८२ ॥ सकळ अधि स्थाना गो उपण ॥ जे पूजनि होय सपूर्ण ॥ ते पूजेचे मुख्य तक्षण ॥ ते निज कर्म खुण  
ते तेक ॥ ८३ ॥ सांडी निती कर जन व्यापार ॥ सजुनि दांभीक उपचार ॥ दवडुनि षट्वाचा व्यवहार ॥ १ जनन स  
र सद्भावे ॥ ८४ ॥ ही उगटो महा पूजा स्थाने ॥ यथ मार्ग जे भजन ॥ ते ते अति गो उपजन ॥ उद्धवा जाण निश्चीत ॥  
॥ ८५ ॥ येथ निष्कपट जे जे शैवा ॥ ते ते अति वल्लभ देवा दिवा ॥ अता पूजा विधि आवे धो ॥ एक वरवा सांगे न ॥ ८६ ॥  
॥ श्री गोक ॥ पूर्व स्नानं प्रकुर्वीत ॥ ध्योतदतोऽगस्तु द्यये ॥ उभयैरापैच स्नानं मंत्रैर्मृद्गुणादिभिः ॥ १० ॥  
॥ श्री का ॥ ॥ हे मळयाग दत्त धावन ॥ यथा काकी कर निजाण ॥ दिह सुदुर्ध कर निश्चान ॥  
मृत्तिका ग्रहण पूर्वक ॥ ८७ ॥ ऐसे सोती यामळ साग भान ॥ मग करावे मंत्र स्नान ॥ विरिक्तता त्रीक विधान ॥ दिक्षा  
ग्रहण यथा विधी ॥ ८८ ॥ जे सा सद्गुरु सा प्रादाय ॥ ते सा चाळवा वा आचार्य ॥ त्या विधी स्नान कर निपाहे ॥ निर्म  
ळ भाव धरावा ॥ ८९ ॥ वेणी श्रम प्रविधीं सी ॥ श्लोक ॥ संध्यापास्यादिक माणि वेदेना चोदितानि मे ॥ पूजांते  
कलये त्सा म्य क्लं कलः कर्म पावनी ॥ वणि श्रम निज विधी सी ॥ विदे संध्या बोली ती जे सी ॥ ते ते वर्णाश्रमी ते सी ॥ नि

जे

॥ ११ ॥

स्य

स्यनेमित्तसीकरावि ॥९०॥ वेदोक्तअचरवेकर्म ॥ निःशेषयागावेनिविध्यकाम् ॥ यानावशुद्धस्वधर्म ॥  
उत्तमोत्तमअधीकार ॥९१॥ वेदोक्तसाउनेस्वधर्म ॥ हाचिमुख्यत्वेअतिअधर्म ॥ हाताआलीयापरब्रह्म ॥ नयागी  
ताकर्मस्वयराहे ॥९२॥ स्वयस्वधर्मजोसाउने ॥ तेचिअधर्माचेमुख्यदाने ॥ स्वधर्मेचित्तशुद्धीसाधने ॥ याको  
गीसागनेअइता ॥९३॥ तेथेस्वधर्मकर्मअचरता ॥ ऐसाभावउपजेचित्ता ॥ मिनहेयथकर्मकती ॥ फळभीक्ता  
मीनके ॥९४॥ देहजउमुठअचेतन ॥ यासीचेतविजनिजनार्दन ॥ तेथेमासेकर्तेपण ॥ सर्वथाजाणरिचेना ॥९५॥  
याबुद्धीचेकर्मचरण ॥ तेभावार्थेभावित्रधार्पण ॥ यापरिनीराभीमान ॥ मासेउपासनसाधक ॥९६॥ मासीप्र  
तिमापूजाविधान ॥ तेप्रथममासेस्थान ॥ तेप्रतिमाश्रीयालक्षण ॥ एकसपूर्णउद्घवा ॥९७॥ श्लोक ॥ ॥दोलाद  
रुमयीलोहीलेष्यालेख्याचसैकती ॥ मनोमयीमणिमयीप्रतिमाश्चविधात्मृता ॥ १३ ॥ ॥टीका ॥  
अदधाप्रतिमास्थिति ॥ ज्यापूजीतासद्यश्चेदेति ॥ ऐसीयाप्रतिमाचिजाति ॥ एकतुजप्रतिसांगेन ॥९८॥ गंउम्मा  
दिसीवामूर्ति ॥ कादारश्रेष्ठकाठव्यक्ती ॥ अधवासूवर्णादिधातुमूर्ति ॥ सद्यः फळतिसाधका ॥९९॥ मूर्तीकाकापउ  
कीटणेकोपडेमूर्ति ॥ यानावलेप्यप्रणिजेति ॥ काकागदितीहीत्साअतिप्रीति ॥ त्यालेखामूर्तिपूजका ॥१००॥ वायुव  
चीजेकेलीमूर्ति ॥ तिनावसिरतामूर्तिस्त्रिणति ॥ तेहीपुज्यगानिश्चीति ॥ सुवर्णव्यक्तिसमान ॥१॥ मूर्तीरेनमईका  
सोज्वळ ॥ हीरामरकतहृदनीळ ॥ पद्मरागमुक्ताफळ ॥ यामूर्तिवैवळअतिपूज्य ॥ २ ॥ मूर्तिमाजीअतिप्राधान्य  
मनोमयमूर्तिपावन ॥ जीचेकरिताउपासन ॥ समाधानसाधका ॥ तेचीप्रतिमापूजाविधान ॥ स्थावरजंग  
मलक्षण ॥ तेहीअर्थाचेनिरूपण ॥ विषदश्रीकृष्णसांगत ॥४॥ श्लोक ॥ चलाचलेतिद्विविधाप्रतिष्ठा जीव  
मदिरं ॥ उद्यासावाहनेनस्तः स्थिरायामुद्धवाचने ॥ १ ॥ टीका ॥ अचेतनाचेतनप्रकार जज्ञतेजीवविस्वाचा

२ जीवशास्त्रे चिन्मात्र मुख्यपरमस्वरकोलीजे ५ भक्तभारार्थसाचार त्याज्जिवाचेनिजमंदिर प्रतिमाजं  
 गमस्वावर आगमशास्त्रिसमत ६ तेथेस्थावरमूर्तिपूजन साधकेकरिताआपण नलग्नेआवाहणविसर्जन  
 न तेथअधिष्ठानस्येभ ॥७॥ श्लोक ॥ अस्थिरायं विकल्मस्यात् स्थितुं भवेद्यं ॥ स्तपनं तु विलेप्यायामन्य  
 उपरि मार्जनं ॥७४॥ ॥३॥ का ॥ जगमप्रतिमाचागर आवाहणविसर्जनपाही येकीआहेयेकीनाही ऐक  
 तेहीविभाग ८ शास्त्रीग्राममूर्तिसीजाण स्वयेभमासेअनुष्ठान तेथआवाहनविसर्जन सर्वथाजाणलागे  
 ना ९ शास्त्रीग्रामाचाकुटका ज्याचेपूजेसीआहेकुटका तेथेपरमात्मानिजसखा सर्वदादेखानादत १०  
 इतरमूर्तिजगमजाण तेथअवाहनविसर्जन साक्षेकरावेआपण हेविधिविधानअगमोक्त ११ स्थंडी  
 लीमूर्तिआवाहन संवेचिपूजातीविसर्जन हेउभयभावनाविसर्जन स्थंडीलिजाणआवश्यक १२ आपूते  
 हादिवाचिद्वन मूर्तिमाजीकजेआवाहन पूज्यांकुरु निविसर्जन देवहृदयीजाणटवावा १३ यथआ  
 पणचिक्वसपरिपूर्ण हेचिक्वयानिजस्मरण आवाहानेविसर्जनेजाण निजामआवरणसाधका १४  
 हाआगमीचानिजात्मभावो आपत्ताचिआपणदेवो आपत्ताआपणपूज्यकपाहाहो हानिजासआठवो  
 निजपूजे १५ देवहोउनिदेवपूजीजे हेनिजात्मपूज्यागोउरवाजे उपसनाकाउध्याजे उद्धवासीदिजेश्रीकृ  
 ष्ण १६ हेनिजात्मतानिजगोडी प्रतिपदिनलभतारोकरी उपासनातडातोडी कौणरोकरीसोसील १७  
 हेअगमीचेनिजगुहजाण प्रतिपदिस्वसंपन्न साधकस्वयहोतिचिद्वन हेतचिउपासनउद्धवा १८  
 हेसेएकतावचन उद्धवस्थानेदेहात्मापूर्ण धावोनिधरिते श्रीकृष्णचरण समूळनिरूपणमजसोग १९  
 तवदेवक्षणे स्थीररोहे जेअगमोक्तगुस्यआहे तेमासेरूपेविणपोहे प्राप्तनकेसाधका १२० अगमोक्त

धि  
धा

गुह्य गहन असोमाशेहे गुप्त धन गुथापुक्तीले पूजाविधान एकसावधान उद्धवा २१ लेप्यालेख्या  
 ज्यामूर्तिजाण त्यासि करवेनाश्मान इतरामूर्तीसीरूपण मथाविधान करावे २२ पूजेकैसेकोमे ॥ श्लोक ॥  
**द्वयेः प्रसिद्धे मेद्यगः प्रतिमादिच्छ मायिनः ॥ भक्तस्य च यथा लब्धे ह्ये सावेन चैव हि ॥ ११५ ॥ टि० ॥**  
 पूजकसकामहोयचांग तेपूज्याद्रव्यहोयसांग पूज्यासाधनहाती गाव्यग फळनिर्व्यगउपजेना २३ भक्त  
 नीष्कामगोडकोडे तेपूजाद्रव्याचेसाकेडे सर्वथाकाहीनपडे भक्तभावउभावेडेउनंता २४ तेथअनयासेप्राप्त  
 तेणेभगवत्होयतूस तोचिपूजायागयथोक्त जाणनिश्चीतउद्धवा १२५ निष्कामवृत्ति फलमूळ दुर्बुद्धिका  
 नीर्मळजळ इतकेनिपूजासांगसकळ होयअविकळमझावे २६ जेथमाझासझावदर तेथउपचाराचा  
 कोणपाड भक्ताचाभावचिमजगोड सुखसुखाउमझुक्ति २७ वास्तुउपचारजेकाही तेप्रतिमामूर्तिपूजेसी  
 पाही मानसपूजेचितवरायी चापिनाहीउपचारा २८ तेथमनचिहोयमाझीमूर्ति मनोमयउपचारेस  
 पत्ति निर्लेभजेआपत्ति तेणेमीश्रीपतिसंतुष्ट २९ प्रतिमादिअष्टौपूजास्थान येथोक्तपूजेचेविधान  
 तूजमीसांगसांगेन देईआवधानउद्धवा ॥ १३० ॥ **श्लोक ॥ स्नानं कौतं करणं श्रेष्ठ मयिामैवतुद्धव ॥**  
**स्वयं त्वेव विन्यासा कृत्वा वाज्य कृतं हविः ॥ १३१ ॥ टि० ॥** प्रतिमामूर्तिपूजास्थान त्यामूर्तिसजेमहास्नपन याना  
 ववोतीजेश्मान सांगभूषणमुक्तुयदि ३० जेथोक्तिउत्तम प्रकार काआपणयासीजेप्रीयकर हाप्रतिमापू  
 जाप्रकार एकविचारस्यंतीताचा ३१ स्वयंतीजेपूजास्थान तेथतत्वाचेधरनिध्यान करावेतत्वविन्यासले  
 स्वण पूजाविधानयाहेतु ३२ आत्मतत्वादिविवंच स्वयंतीविवंचूनिसाच हृदईक्षीरसिखाकचच नेत्रआ  
 स्वादिशंचनिजपूजा ३३ अग्नीचेरायीजेपूजन तेथमासिकरूनिध्यान अज्यकृतिहव्यहवन हेपूजाविधा  
 नअग्नीचे ३६ अग्नीदिगाचेहवन येणेविश्वासेसंपूर्ण हविद्रव्यकृतिहवन हेपूजाविधानअग्नीचे ३७

स्नानभोजनउगंकार सांगपूसपरिकर  
 तेणे श्रीधरपूजाया

॥ १३० ॥

॥ गुरुपुत्रगणकोपहनं नमोतिषायकृत्तरे ॥

॥ तिका० ॥

आग्नीदेवाचेहवन येणेविश्र्वाससपूर्ण हविद्रविकरिताहवन अग्नीपूजनयोहेतु ३८ विचारिताश्रुतीचा  
 अर्थ उपोनाशायणयेसाक्षांत येथपूजाविधानयथोक्त जळीजळयुक्ततर्पण ३९ हर्दमासेजेपूजास्थान  
 तेथेमनेमनाचेअर्चन मनोमयमूर्तिसंपूर्ण पूजाविधानमानसीकृ० मासेमुख्यवे ३९ स्थान ब्रह्ममूर्तीजे  
 ब्राह्मण तेथीलजेपूजाविधान आज्ञापालनदासत्वे ४० ब्रह्मासीजाचेनिब्रह्मपण तोसद्गुरुमासेपूज्यास्था  
 न सर्वोधीश्रेष्ठपावन तेथीलपूजनतेलेसे ४१ जीवसर्वसीआपण यासीरिघावेअनन्यद्वारण याचाबुव  
 नासीप्राण निश्चयप्राणविकावा ४२ गुरुचिनिचसेवासेवन आवडीकरणेआपण हेचितेथीलपूजाविधानये  
 णेसुखसपूर्णसाधका ४३ सद्गुरुसेवाकरितापाही ब्रह्मसायुज्यलागेपायी गुरुद्वेपरतेकाही श्रेष्ठनाहीसाधन  
 ४४ सद्गुरुस्वरूपतेजाण अंखडलेब्रह्मपूर्ण तेथेआवाहनविसर्जन सर्वथाआपणनकरोवे ४५ निष्कपटभावेस  
 पूर्ण सद्गुरुसीजोअनन्यद्वारण याचेमीहीवदिचरण यथवरिजाणतोधन्य ४६ नित्येभेभावेसद्गुरु पूजीताते  
 वेअधोक्षत्र याभावाचिनिजगुज स्वययंदुराजसांगत ॥ ४८ ॥ श्लोक ॥ ॥ सूर्यचाभ्यर्हणं प्रेष्टं सात्त्विकं सत्त्व  
 कादिभिः ॥ श्रद्धयोपाहृतं प्रेष्टं तत्केनममवार्यपि ॥ १७ ॥ टी० ॥ माझादार्ढ्यनिप्रीति श्रद्धायुक्तअनन्यभक्ती  
 भक्तभावेजळआपिति तेणेमीश्रीपति सुखावे ४९ तोजळविंदुयथासुखे भ्यामुखीसेतीजे आदिपुरसे तवभ  
 कीभावाचिनिहरिसे मीसुखरूपसुखावेदेख १५० मासेत्रैलोक्यासीसुख ऐसामीहीसुखरूपदेख यामजहोयपरमसं  
 तोख भाविकाचेउदकसेविता ५१ याजेअविंदुचियासादि रमानावेडेगोमटि ब्रह्माजन्मलगामसिपोटि तोहीवावटिनावडे ५२  
 भाविकाचेनिजउदकत्वेखे मजवेकुटहीसालेकीके द्रौषदायनीचिनिद्रासुखे याचीतुळेउतरली ५३ भाविकाचे  
 उदकापुरे मजआणिककाहीनावडे तेगुहीगधादिपूजाजोडे नेवेच्यचोखडेरसयुक्त ५४ तेपूजेचीसुखप्राप्ती  
 उपमानाही त्रिजगति ऐसाभाविकाचेयेभक्ती मीश्रीपतिसुखावे ५५ भावेकरिताभेदिक मिहसक्यसातो

धि

ग

५

शुद्धरत्नाचर्यायामथसंभारः ११॥ १॥

निश्चीति ऐशीयानिश्चीतभावार्थी त्याचे निजवे संतृप्ती मज होय ५६ येरजो अभक्तदंभस्थि  
ती जिविद्रव्याआशाबाह्यविरक्ति लोकीकप्रतिद्वेषुरति मासीभक्तिजोमिरवि ५७ ऐशीयाअभक्ता  
चिस्थीति छत्रचामरगजसंपत्ति मजआर्षिताहीआभक्ति रसुखलेषचित्तिउपजेना ५८ क्षीरनीर  
निवृत्तीराजहंस तेथनिस्तुद्धिधत्ताकापुस तेविअभक्तजनि संतोष मीरुषीकरापावेना ५९ कागाचिगायनकळा  
जिविताज्ञानाविन्नरशाळा तेविअभक्ताचिभजनकीळा मासीचिह्वातोदोना १६० जेविरजखलेचेपक्कवान् उते  
मपरितेअतिहीन तेविअभक्तचेभजन कदाजनादिनस्पर्शना ६१ आभजनानात्केनारायण ऐसेजेअभक्ताचे  
भजन तणेभजनेजनार्दन अनुमात्रलोषेना ६२ एवंभजनभक्तमार्ग दाउनिआधिकाराचेभाग आतासमू  
ळमार्ग दाउनिआधीकाराचेभाग सांगस्त्रीकृष्णसांगत ॥६३॥ श्लोक ॥ गंधो धूप सुमनसो दीपोऽन्नाद्य  
स्नानः ॥ १ ॥ शुचिसंभारसंभारः प्राग्भैः कर्मितासनः ॥ आसीर्कः करुनिमंगवस्नानआपण वैदिकतात्रिकमंत्र  
स्नान सारुनियानि सुविधान शुचित्वपणयानाव ६४ मगदेवपूजासंभार शोधोनिकरावेपवित्रे यथास्थानिपू  
जाप्रकार गंधादिउपच्यारटेवावे ६५ श्वेतकंबलचेलाजीन पूर्वदर्भागीअसन पूर्वामुखवैसावेआपण अथवा  
जाणउदमुख ६६ स्थावरपूजातेदेख असनकरावेमूर्तिसन्मुख हाअसनविधिनिर्देख पूज्यान्यासादिक  
हरिसांगे ॥६७॥ श्लोक ॥ कृतन्यासः कृतन्यासो मद्रचोपणिनामृजेत् ॥ कलेशो प्रोक्षणीयं च यथावदुपसा  
चयेत् ॥ २० ॥ टीका ॥ विधीयुक्तं घातुनिआसन गुरुसीकरुनिनमन परमगुरुपरमेष्ठीसिजाण अभीवेद  
नआतिप्रोति ६८ जोमंत्रआपणास त्यामंत्राचेदेहीकरावेन्यास मंत्रमूर्तिआनोनिध्यानास पूजामान  
सकरावि ६९ जेमूर्तिआत्मीध्यानासी तेचिआनाविद्याप्रतिमसी हातिधरनियाअर्चसी करावेन्यासासी

प्रति मा आंगी १०० कलत्रा उमाणि प्रोक्षणीजाण साधावि यथाविधान जले करुनिया पूर्ण द्रव्यादि  
 चदन द्रव्योक्त ॥ ७१ ॥ **श्लोकः** तद्भि देव यजनं द्रव्याप्यासा नमवच ॥ प्रोक्षपात्राणि त्रीण्यदिस्तेसै द्रव्यैश्च साध  
 जे प्रोक्षोको ७२ यत् ॥ ते प्राक्षणपात्रीचे जळ नखोदकन करिता निर्मळ तेणे पूजासभारसकळ केन्ना गेतका  
 अ प्राक्षावा ७२ ते प्रोक्षावे देवसदन आपणासी करोवे प्रोक्षण प्रोक्षोणि देवपूजास्था  
 न पूजाविधान सांडावे ७३ पाद्य अर्घ्य आचमनीये तदर्थ मांडावे पात्र त्रय जले पूर्ण करुनि पाहे शि  
 न्नद्रव्य उगहे त्रय पात्रासी ७४ त्रया माक दुर्वा विष्णु क्रांता पाद्यपात्री हे द्रव्य सुद्धता गुधपूष्य फल उगहेता ए  
 वं कुशागता अर्घ्यपात्री ७५ तेनावे काजाति फळ लवग कर्पूर कंकोळ आचमनपात्री हा द्रव्य मेळ सुद्धत  
 असंयुक्त ॥ ७६ ॥ **श्लोकः** पाद्या अर्घ्य चिमनीयार्थ त्रीणि पात्राणि देविकः ॥ हृदा ह्रीं ह्रीं उध सरवया गायत्र्या  
 वा अभिमंत्रयत् ॥ ७७ ॥ गुरुमंत्र दीक्षाजे सी ज्यारसी तोचि निज मार्गशीखासी तेणे पाद्यादिति ही पात्रासी सांप्रा  
 दायासी मांडावे ७७ पाद्यव्यावे हृदय मंत्रे अर्घ्ये उपवीक्षीरो मंत्रे ७८ अचमन अर्घ्ये विक्षीरामंत्रे गुरु संस्कारे उग  
 मोक्त ७८ तेचि तीनि पात्रे जाण गायत्री मंत्रे उगपण अभिमंत्रो निया पूर्ण देवार्पण करावि ७९ गुरु सांप्रदाय  
 नेटक यात्वा गीयाते देशीक स्वयंबो लीलायदुनायक दीक्षाविवेक निज दृष्टा १८० आगमशास्त्री चानिज  
 मार्ग भूत सुद्धी प्राणप्रतिष्ठायोग तेण अन्वये श्रीरंग **श्लोकार्थ** सांगसांगत ८१ वाथु ॥ **श्लोकः** पिंडे न  
 यमिस सुद्धसप्रस्था परां मम ॥ उग्वी जीवकुला ध्यान्वादाते सिद्धभावितां ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥  
 वायुविजे भावाहुनि पिगला प्राणपुरुनि तोचि कुंभकेसुभुनि मात्राधारणी धरावा ८२ वायुजो धारणिध  
 रावा तो ववनपुट अह्लासका तवची करि निरोधावा मगरे चावा नानैः नानैः ८३ ऐशी करिता प्राणधारण  
 स्वये कल्यावे शरिर शोषण शरिर शोषते मानुनि जाण देहदंडन मांडावे ८४ आधारस्थीत जो आग्नी तो अ

श्रीविजेचतुनि तोदेहलाउनिदेहनि भस्ममानुनिनिजेदेह ८५ देहदेहन ७७ तिसंतस तेथेचंद्रविजेच  
 द्रामृत आणोनिनिववावसमत नगदेहतेथकृत्वावा ८६ देहकृत्वावाजोयथ पूर्णपाव्यईद्रीयक त्याचा  
 दूदपापद्राभात आण्वीजीककातेथेपाहाविमासी ८७ मासीजीवककापरम सूक्ष्माहुनिअतिसूक्ष्म या  
 लागीअन्वीचिनिचेकाम विश्रामधामजगाचे ८८ उकारउकारमकारस्थीति यातेप्रकाशोआण्वीज्योति  
 तेतवशाहाहुनिपरति योगीनादृत्तिलक्षीजे ८९ तेरेहीसवाह्यपरिपूर्ण असोनिस्वक्षेत्रे अतिलक्षणाण  
 तीतेहृद्यद्योगीजन लक्षीतिआसन प्राणायामे १९० तेअण्वीजीवनककाअव्यक्त योगीनिजभावनायुक्त  
 तितेकरुनियायुक्त हृदयीचिंतितमहामूर्ति ९१ नानाजीवसमूजाण याचेजेअयतनस्थान तेमहामूर्तिनि  
 रायण हृदईसजनचिंतिति ॥९२॥ **श्लोक तयासभूतयांपिडेव्यासेसंपूज्यतमयः॥ आवाद्याचिदि**  
**पुस्थाप्यन्यतांगंमांप्रपूजयेत्॥१५॥** जेविग्रहप्रकाशादिपुम्यितितविदेहप्रकाशीजीवज्योति तेसागोपागमा  
 श्रीमूर्ति हृदयीचिंतितिसाकार ९३ जेवितुपतुपपणेधिजले तेचिवर्णव्यक्तिआले तेविचेतन्यमासेमुसावले  
 निगविग्रहेसाळेसाकार ९४ ऐसीतेमासीसगुनमूर्ति विन्मात्रतेजेहृदयदिही तिनेव्यापूनिदेहाचिस्थीति चीत्तिनि  
 जभक्तिउपजवि ९५ देहजउमूठअचेतन तेथेमूर्तिप्रगणेनिचिद्वन अचेतनाकरनिसचेतन करविनिजभ  
 जनउल्हासे ९६ जेविहरणुलीचेसोगजाण हाराणिरूपेनाचेआपण तेविभक्तभावेनारायण भजनपूजन  
 स्वयकर्ता ९७ यापरिअभेदिभजन मूर्तिपूजीताचिद्वन पूज्यपूज्यकहेआठवण सहजेजाणमाळेवे ९८  
 मावकत्वाहाभजनभेद पुल्हासेभक्तिचाआवाचभक्त हागुरुमार्गअतिशुद्ध श्रीयप्रसीद्धमजलागी ९९  
 जेथेमासीअभेदभक्ति तेथेमीसर्वस्वश्रीपति अतुउत्तोभक्ताचाहाति स्वानदप्रीतिउल्हासे १०० जेविका

भेद

घातिजे

अफारमे घजळ धरणवांघिचिंतळा तेवि मजअनंताचा एकवळा अभेदभजनात्मा उगतुडे १ आवडीव  
 वलेसे राजळ तेणेनुपजेचिउत्तमफळ तेचितळा भरतीयाप्रबळ तेणेपिकतिकेवळारा जागरे २ तैसेमासेस्य  
 रूपवाडेकोडे अभेदभक्तिमाजीउगतुडे तैब्रह्मानंदेगोधळपडे शीगचढेभक्तीचि ३ अभेदभक्ताचाद्वारा  
 पारसी तीर्थयेतिपवित्रहोवयासी सूरनरत्नागतिपायासी मीहृषीकेशीत्यामाजी ४ अभेदभक्तापासीदे  
 स्व सकळतिर्थहोतिनिदेशि भक्तिचेमाहेरतेआवत्राक मजहीसूख याचेनि ५ अभेदजेकियो ति यानाव  
 मासीउत्तमभक्ति ऐसाउत्कासेश्रीपति उद्धवाप्रतिवोलत ६ अभेदभक्तिवाडेकोडे श्रीकृष्णसांगेउद्धवापुळे  
 ह्मैकृष्णपणनाआठवे कथाराहीतीयरिकेडे तेहीघउपुडेस्मेरना ७ देवविसरत्नानिरूपण तवउद्धवासी  
 वानतीस्वुण तोहीविसरत्नाउद्धवपण कृष्णकृष्णपणनाआठवे ८ अभेदभजनाचाहारेस्व देवभक्तशातएक  
 होघापडेनिरेकटक परमसूखपावळे ९ उद्धवनिजबोधेपरिपूर्ण वरिपूजाविधानप्रश्न यथकरावयाकायका  
 रण ऐकीअशकामनिकत्मील १० तदिउद्धवाचाचित्ति (उगाराहाताचिश्रीपति जारितेनिजधामा प्रती  
 यातागीप्रश्नीकित्तिपुसे ११ उपसनाकाउनागुह्यज्ञान अगमोक्तपूजाविधान उद्धवमिसेश्रीकृष्ण वेदार्थ  
 आपणस्वयबोले १२ सकळवेदार्थब्राह्मविधि ग्रंथीश्रीकृष्णप्रतिपादि जैसीश्रद्धातेकीसिद्धी हावयाकी  
 सुद्धीसाधका १३ असोहिग्रंथविसति ऐकताअद्वैतभक्ति उद्धवनिवातानिजचित्ति तेणेश्रीपतिस्ववा  
 वला १४ तेणेसंतोषेक्षणेश्रीकृष्ण उद्धवाहोईसावधाने पूछीलपूजाविधान तुजमीसांगेनयेथोले १५  
 पूज्यपूज्यकयेकमताध्यान करोनियादुधधारण तेचिवाह्यपूजेलागीजाण करावेआवाहनप्रतिमेमाजी  
 १६ प्रतिमेसन्मुखआपण आवाहणमुद्रादाखउन मासीचीकृष्णसंपूर्ण प्रतिमेसीजाणभावाकी  
 १७ तेव्हामूर्तिचेजउपण निःशेषनदेखावेआपण मूर्तिभावाविचेतन्यघन मुख्यआवाहनयानाव १८

रथी

गुरुमुखे मंत्रनिर्देशे तेषामंत्रे मूर्तिसन्ध्यास करौवे सर्वांगी सावकात्रा शास्त्र विन्यास उगमोक्त

१९ एवं आवाहनस्थापन सन्धीधिसन्निरोधन रुमुखीकरण स्वागतन घासमुद्रा उगपण द्वावाव्या

२२० उगुगुटनसकृतीकरण चाउगाद्यै समुद्रादाउनिजाण मगहोतुनिसावधान पूजाविधानमां शवे

२१ ॥ श्रीलोक ॥ पाद्योपस्यद्रिहिणा दीनुपचारान्प्रकल्पयतु ॥ धर्मादिभिश्च नवभिः कल्पयित्वा सनंमम

॥ २५ ॥ पद्ममण्डलं तत्र कर्णिकाकेसरोजलं ॥ उभाभ्यां मुखतश्च योसि द्युये ॥ २६ ॥ श्री ॥ स्नाने मंडपकल्पुनिजाण तेषां नावादेवचिद्वन पद्यअर्घ्यअचमन मधुपर्क विधाने करावे २२ अंभंग

उगमर्दन पुरुषसूक्ते यथोक्त स्नान पीतारपरिधान स्नानमंडपिजाणे देनासी २३ इतरयथोक्तपूजन

करौवे सीहासनिस्पृण तेषासनपिटावरण स्वयश्रीकृष्णसांगत २४ सीकासनिअवरणक्रम आधार

प्रकृतिकूर्मक्षेम क्षीराब्धीस्वेतदीपकल्पदम मनोरमभावावा २५ व्यातकीरनमंडपनेटक ह्यामाजीविचि

त्रपरियक ह्यामंचकाचाविवेक यदुनायकसांगत २६ धर्मज्ञानवैराग्यअत्रवर्ष तेषिमाचवेअतिवर्ष अधम

अज्ञानअनैवर्ष अवेराग्येसीपाहेगाते २७ ईश्वरतत्त्वनिजसुत गुणागुणिवळोमितेथे मंचकविणित्वाअचुवि

त योगयुक्तमहामुद्रा २८ ह्यामंचकावरिशेषपुटि शोभेभारिये श्री सीगोमटि सहस्रत्रफणी मणीतेजउ

टि छेत्राकारुटि झळकत २९ शेषपुटीनिर्मळ विकारलिरातोसळ सकृणीकाअसुदळ शोभेके

वळमनोहर ३० सत्प्रतीकमळदळ क्षाननाळसाचिसरळ प्रकृतिअसाधेजेप्रबळ तेषिअसु

दळकमळाचे ३१ ऐसेकमळदळअतिसुंदर श्रीडीकारतेचिवेकार वैराग्यकरणीकासधर मघमघी

थोरसुवासे ३२ पूर्वदिक्कमळदळीजाण देवताव्यासाव्याख्यास्थाना विमळउल्लेखआणिज्ञाना

कीयात्रातिजाणाचोथीपै ३३ योगप्रक्रिसयाईज्ञाना कर्णिकायोजिजेमध्यस्थाना कल्पुनिअनुप

मरचना अनुग्रहाजाणाख्यापि ३४ आत्मा उत्तरात्मा परमात्मा हासमूक भागदेवानमा संवर  
 ज्ञाणाणि मोहतमा पुरुषोत्तमाष्टौभाग ३५ ऐरापरिपिटन्यास उगमोक्तसावकाशा करीनिया  
 हकीकैदा सीकासनासआणावा ३६ उन्नताणियुग्मचामर नानावायेजयजयकार दागुनिपिटसमुद्रा  
 सधर असनिशीधरेवैसवावा ३७ मगसर्वगतासीउवाहन मजअधिष्ठानासीअसन मजनिराका  
 रासीजाण दावितिउगपणविकारमुद्रा ३८ मजचिद्रुपात्मागीकोचन निःशब्दकलीतिश्रवण मजचिख  
 मुखासीवदन निमासुरजाणभाविति ३९ मीविश्वघोरोपायीचातत मजविश्वबाहुचाहीहात मजस  
 र्वगतातेषु स्थानभावितेयेकदेवी ४० मजनिर्विकारासीविकारोपचार मजविदेहासीअंककार मजस  
 र्वसमानअरिमित्र भावनाविचित्रभाविति ४१ मजअकसीकर्मबंधन अज्यासीजन्मनिधन नित्यतृषा  
 सीभोजन निर्गुणासगुणभाविति ४२ याआवधीयाचाआभीप्रावो उपासनाकांडनिर्वाहो जैसाजैसाभ  
 क्तिभावो तैसामीदेवोतयासी ४३ मीआवाससकळकाम परीभक्तप्रेमात्मागीसकाम जैसाभकाचा  
 मनोधर्म तैसापुरुषोत्तममीतया ४४ भक्तजैसाभाविमाते मीतैसाचिहोयतयाते तोजेजेअर्पिभावा  
 र्थ तेआर्पमातेसहजेची ४५ मीसर्वत्रभरलोअसे तेथजोजेथमजदेवो भक्तभावार्थअर्पुवैसै  
 तेअर्पेअनयासेसहजेमज ४६ मीसर्वत्रदेवादिदेव तैसाप्राणियाचानकेभाव यात्मागीभक्ताचाजेथस  
 द्भाव तोमीदेवसहजेची ४७ भक्तभावार्थचिभुषणे यात्मागीवाडेकोडे भक्तभावार्थमजआवडे भ  
 क्तभावाहुनिपुटे येकुरनावेडशीराधीही ४८ भक्तभावार्थचिभुषणे आगीकानावयाश्रीकृष्ण मा  
 निगुनेसगुनहोणे भावार्थगुणेभक्ताच्या ४९ यात्मागीमीअजन्माजन्मे अकर्माहीकरिकर्मे अनामाही  
 धरिनामे भक्तमनोधर्मतरावया २५० निर्गुणितागल्यामन मनचीहोयचैतन्यघन सगुनिटसावत्मा

मन साधक श्री कृष्ण स्वयं होति ५१ निर्गुणाचा बोध अटक या लागी उपासना विविक्त सगुण  
मूर्ति भाउनि देख तरले साधक अनायासे ५२ हे अगमोक्त उपासना विधी येणे भोग मोक्ष उभय वि  
धी साधका पावति श्री श्रुद्धी श्री कृपा निधी संतुष्टे ५३ तेचि उपासना विधी विधान मागासांगता पू  
जेन देवसी हासनि बैसला पूर्ण पुढे आवरण पूजा ऐक ॥ ५४ ॥ श्लोक ॥ सुदर्शन पाच जन्य गदासी

**पुष्यनुहिलान् ॥ मुद्रात्तं कौस्तुभमात्तं श्रीवसंचानु पूजयत् ॥** अण्वी जीवक केसी देहवरण सिहास

निदान्त्पावरण सुदर्शनैः आयुधावरण भापु ली भापण हरिसांगे ५५ सतेजधार सुदर्शने

त्रांस्वत्रोभे पाच जन्य नदकतोखज्ञाण गदाजाण कौमोदकि ५६ शाङ्गधनुष अतिसवळ सुवर्ण

पुस्तिकाण सरळ हस्तभाणि मुसळ आयुधे प्रबळ पुजावि ५७ या आगही भुजा सायुधा सरळ

कंठि कौस्तुभवनमात्तं कासे कसीला पिबळा घनः कामसावळा त्रोभत ५८ ब्रह्मण्य देवरमानाथ ब्राह्म

णाचारणघात हृदयी आंळकार मीरवित शोभा अद्भुत तेणे त्रोभे ५९ चिद्दरनाच्या आंळकारि (गुण

काळो निया बोहरि बोविकी वैजंति कुसरि ते हृदयावरि लोळत ६० यापरि सांळकार सायुध त्रांस्व

चक्रैः प्रसेसी अगाध ऐसा त्रोभत्तास्ययं बोध नारदादि सनिदति श्रुतिसदा ६१ यापरि सांळकार सायु

ध पूज्यपुजा निया गोविंद मंग पूजा वै पाशवर्द ऐक विषदसांगेन ॥ ६२ ॥ श्लोक ॥ नदं सुनदं मरुतं

**प्रचंडं चंडमेव च ॥ महाबलं बलं चैव कुमुदं मरुक्षणं ॥ ३८ ॥ टीका ॥**

नदं सुनदं देवापासी गरुडसदा तिष्ठे दृष्टीसी चंडप्रचंड दोही बाहीसी अही निवृत्ति तिष्ठति ६३

बळभाणि महाबळ समुखसंत अवधाननीळ कुमुदकुमदाशुकेवळ पासीसी प्रबळ स्वयउभ ६४ गरु

उदृष्टी तिष्ठे भापण यरनदादि जे अष्टौ जन तेथे अष्टौ रिशा प्रतिजाण पाशवर्दान हरि निकटि ६५

॥ श्लोक ॥ दुर्गा विनायकं व्यासं विष्णुं कसे मं गुरुन करान् ॥ खेस्ये स्थाने ल भि मुखान् पूजयेत्सी

॥ २५ ॥

राणारिभिर्दुर्गा विनायक जाण ॥ व्यास आणि वित्रव कोन ॥ चहु कोणी चारि स्था पुन ॥ करावे पूजन देवा भी

मुखे ॥ ६६ ॥ मूळ मूर्ती सी उपाधि न्वाकार (गुरु उपाणि परम गुरु परमेष्ठी गुरु सी यकाकार पूज्य प्रकार क  
रावा ६७ इंद्रादि अष्टौ लोक पाळ अहानिया सकळ स्था पुनि अष्टौ केवळ ते ही तळाळ पूजावे

६८ गुरु दुर्गा दिक लोक पाळ पूजावे सांगो पांग सकळ ब्रह्म क्षण पायादि अष्टौ कळ पूजा निश्चळ  
करावि ६९ तेची पुजेचे पूजोपचार कौण कौण पै प्रकार सायी श्को की सार गधर संक्षेपाकार सांग  
त ॥ २७ ॥ श्लोक ॥ ॥ चंद्र नीशीर क पूर कुंकु मागस्वा सितैः ॥ सति तैः स्नापये न्मंत्रे निय

सनि

दा विभवे ॥ ३० ॥ ॥ ॥ स्वर्ण धर्मानु वाके न महापुरुष विद्यया ॥ पौरुषेणापि सूतेन साम

भी राजनारिभिः ॥ ३१ ॥ एका वेळा कापुर चंदन कुंकु मवेशार यामा जी मेवुनि अगार धूपिते नर

स्तपना सी ७१ रुवा सी तस परिकर गंगा जळ अति पवित्र शंख मुद्र पुरस्कर शंखी ते निरभरावे  
७२ ऐसे जळ घेउनि ७३ आपस्त भशाखी च प्रसीद्ध सुवर्ण धर्मानु व्यर तेणे अभिषेक विषद मजक

सु

रावा ७३ अथ वाके वळ पुरुषोक्त रुद्राभिषेक विष्णु सूक्त रूही मंत्री मंत्रोक्त देवासी यथोक्त स्नान द्यावे

७४ का साम वेदचे गायन यामा जी साम निराजन तेणे करुनिया जाण देवासी स्नान करावे ७५ असल्या

वे भवसपन्न निययावे हे स्नान नातरि पूर्व विशेषे जाण करावे आपण जया त्या दिक् ७६ अगमोक्त सु





तेथ करुनि अवाहन प्रतिदित्ता जो हुताशन त्याशी करुनि करस्पर्शेण परिसमोहन करावे ७ दर्भाक  
 रावे परिसर्षण मग करावे प्रयुक्षण इध्मावही विसर्जन त्रिसधानटेवावे ८ करुनि बह्नीचे अस्तन करावे  
 अज्यस्थाली स्थापण व्याहृतासमिधाजाण अन्याधानत्यानाव ९ प्रोक्षणीपात्रीचे विधान करुनि भरावे ज  
 कपूर्ण तेथे करुनागे जळे आपण होमद्रव्यजाण प्रोक्षावि ३० कुडीप्रदिस हुताशन तेथे करावे मासे ध्यान  
 ते ध्यान मूर्तिचे लक्षण स्वयं श्रीकृष्णसांगत ॥ ११ ॥ **श्लोक ॥ तस जांबूनद प्रख्यं रांख चक्र गदांबुजे ॥ लसा**  
**च तु भ्रंजं शांतं पद्म किंजल्क वाससां ॥ १८ ॥ स्फुरति शीट कटकक टिसूत्र वरांगदम ॥ श्रीवत्सवक्ष**

**संभ्राजतू कौस्तुभं वनमालिनं ॥ १९ ॥** जैसी तस स्वर्णनिभा तैसी मूर्तिचे अंगप्रभा चतुर्भुजसाजी  
 दिग्गोभा चिन्मात्र गाभासाकार १२ मुकुरुकुंडले मेखळा श्रीवत्सत्रोभेवक्षस्यळा अपारस्त्रेवनमाळा  
 सळके गळा कौस्तुभ १३ मुकुरुकुंडले मेखळा श्रीवत्सत्रोभेवक्षस्यळा अपारस्त्रेवनमाळा सळके गळा  
 कौस्तुभ ॥ १४ ॥ **श्लोक ॥ ध्यायन्नभ्यर्च्य शरुणि हविषाभि घृतानि च ॥ प्रास्याज्यभागो वांधारो दवा**  
**ध्याज्य पूतं हविः ॥ १५ ॥** ऐसे सांग मासे ध्यान अग्निमाजी भाउनि जाण करुनि अवाहन पूजन विध्युक्त हवनमांडावे  
 १५ अग्निविधियुक्त अवा आह्वानुनी समीधाघृते आभीधास्तु अज्यभोगदो आवशनि प्रथम हावणी हो  
 मावा १६ तेथ तित्ताज्य हविद्रव्यपूर्ण घृतलुत आवदान अगमोक्त होमविधान स्वयं श्रीकृष्णसांगत १७  
**॥ श्लोक ॥ उद्वेग्या नूते न शोभा वाउता ध्यायं वदान ॥ धर्मादिभ्यो यथा त्यायं मंत्रैः पश्ये घृतं बुधः ॥ १७ ॥**  
 लक्षुनि मुखबोधे देवांचा मूलमंत्रे होमसाधकाचा कापुरुष सूक्त सोळावे लौ हा होमाचा विधी मार्ग १८ धर्मा  
 दिक्पियर्चन इतर देवता आवरण तेथे एक एक आवदान नाममात्रे जाण होमावे १९ मग सिष्ट कदाचे आवदान

३५

साधके व्यावे सविधान ॥ ऐसे हो माचे निज भजन ॥ अकसज्ञान जाणति ॥ ३२० ॥ होमादि मूर्तिभजनविधि ॥ यणे  
 तकाजसाधकासीही ॥ अक पावति निजपदि ॥ जाणतीशुद्धीउद्धवा ॥ ३२१ ॥ **अभ्यर्थाथ न मरुस पा**  
**ध देवो वलिं हरे त ॥ मूल मंत्र जे वे दुःख स्मरना रायणा** ॥ ३२२ ॥ **मिका** ॥  
 यापरि होम विधियुके उचन ॥ करु नि करावे साक्षीगेन मन ॥ मग देवाचे पाषंदगण ॥ त्यासी बकी हारण कत्मावे  
 ॥ ३२३ ॥ मग वास्य प्रतिमा पूजास्थान ॥ तेथ यको निया आपण ॥ मूल मंत्राचे स्मरण ॥ ध्यान युक्त जाण करावे ॥ ३२४ ॥  
 पूज्य पूज्यक अभिन्न ॥ परापर जो कानारायण ॥ तेणे परब्रह्मीला उ निमन ॥ घालावे आवधान सावधान वृत्ति ॥ ३२५ ॥  
 ध्यान जवरथी रावे मन ॥ तव स्थीर रावावे असन ॥ तेथूनि उपरमत्ता मन ॥ पुढे पूजा विधान हरिसंगे ॥ ३२६ ॥  
**॥ श्लोक ॥ दलोचमन मुच्छे व विवक्षय कल्पयते ॥ मुख वंसां सुखाभिसनापुलाय मर्हयेत ॥ ३२७ ॥**  
 एवं विसर्ज्या ध्यान ॥ क्षाले देवाचे भोजन ॥ ऐसे भाउ नि आपण ॥ शुद्धाचमने आर्पेवे ॥ ३२८ ॥  
 अग्निमाजी ल मूर्ति ध्यान ॥ प्रतिमा पूजीती ते आपण ॥ दोही गयी शुद्धाचमन ॥ यथोक्त जाण करावे ३२९  
 देवाच्या भक्त रोषासी ॥ भाग्यावा विष्णु स्नेनासी ॥ मग काठुनि उच्छेदारी ॥ यावे देवासी करो दर्शन ॥ ३३० ॥  
 कापुरघोळी वासुपारिफोडी ॥ सुर्वेण वणीपनाची विडी ॥ कात सुखासी लापरिवाडी ॥ अभिनवगोडी तांबुल ॥ ३३१ ॥  
 यजलेंव गाळे कोळ ॥ उम्र आर्पिले जाति फळ ॥ सूरगरगले तांबुल ॥ दिसे मुख कमळ सांजीरे ॥ ३३२ ॥ चुवा  
 केसुरि बुकासधर ॥ अपूनि पुण्याजंठी संभार ॥ जेणशी घसंतोषे श्रीधर ॥ ते प्रेमसाचार हरिसंगे ॥ ३३३ ॥  
**॥ श्लोक ॥ उपगायनाण नृसंकर्मभि नयन्मः ॥ मत्कथाः श्रावन् शृवन् सुहृत्क्षणीको भवेत् ॥ ३३४ ॥**  
 क्षानध्यान उपासकता ॥ हे गौण जाण सर्वथा ॥ देवभावाचा भोक्ता ॥ भावे तत्वता देव भेटे ॥ ३३५ ॥ ध्यान गुटली  
 यानि जमन ॥ करावे मासे नामस्मरण ॥ कामाक्षागुणाचे श्रवण स्मरण ॥ आदरे जाण करावे ॥ ३३६ ॥ कृतिता

थी

प्य

हरिगुण यथा श्रवण ॥ तेणे सुखावे अतः कर्ण ॥ सुखे सुखावो न आपण ॥ स्वयं हरि कीर्तन करणे ॥ ३४ ॥  
 नित्यं नयचे परि ॥ हरि रगणी नृत्य करि ॥ हावभाव कटाक्ष कुसरि ॥ अभिभयो न धरि कर्माचा ॥ ३५ ॥ गोवर्ध  
 न उद्धरन ॥ आंगे दावावे आपण ॥ कामा दुनिया दृढान ॥ श्यकभजन दावावे ॥ ३६ ॥ पूतना प्राण शोषण  
 कुवल्याचे निर्दहन ॥ दातुनि मल्ल मर्दन ॥ हरि कीर्तन करणे ॥ ३७ ॥ नवलप्रेमाचा उद्योग ॥ गयपथ नाम प्रव  
 र्ण ॥ भूजग प्रयातादि आगाध ॥ गाति स्थाने द स्फुति स्तोत्रे ॥ ३८ ॥ **श्लोक ॥ अथ वैश्वानरायणोक्तं ॥ पौराण**  
**प्रकृतेरपि ॥ रक्तवाप्रसीद भगवन्निजितिवरेत इति ॥ ३९ ॥** मासी स्तुति स्तोत्रे पुराणे सादर करावी  
 श्रवण ॥ श्रोता मी नली या आपण ॥ कथानिरूपण सांगावे ॥ ४० ॥ शुद्ध नय स्तोत्र पठणे ॥ कांक्षामंत्रे हरि  
 चे स्तवन ॥ येलोकि उच्चरे जाण ॥ देवासी समान निज भावे ॥ ४१ ॥ पुराणेचे श्रेष्ठ स्तोत्र ॥ अथवा पठतो नाम मंत्र ॥  
 उपर्युक्त भावार्थ साचार ॥ समान श्री धरमी मानि ॥ ४२ ॥ नेणे वेद शास्त्र पुराण ॥ देवळ वाळा भोळा जाण ॥ तेणे करि  
 ता प्राकृत स्तवन ॥ मीजनार्दन संतापे ॥ ४३ ॥ वैदिक युक्त व्याख्यान ॥ पाठका दोष बाधी गहन ॥ प्राकृत करिता ह  
 रिचे स्तवन ॥ दोष निर्दहन तेणे होनि ॥ ४४ ॥ शास्त्र श्रवण पुराण रिद्येति ॥ पाहीजे पंचमी सप्तमी विसती ॥  
 पठता उरबद्ध नाम किति ॥ भगवत्प्राणी प्रापक ॥ ४५ ॥ वेद शास्त्र हो पुराण ॥ का प्राकृत भाषा स्तवन ॥ यथ भा  
 वाचि श्रेष्ठ जाण ॥ तेणे नारायण संतोषे ॥ ४६ ॥ संस्कृत वाणी देवे केली ॥ प्राकृत चोरापा सुनिश्चाली ॥ असो  
 ते हे पक्षा मानि वाली ॥ देवाचि चाली निराभीमान ॥ ४७ ॥ देवासी प्रेमाचे पठिय कोड ॥ न पाहे विसत्तिचे का बाड  
 भावार्थ भाविकाचा गोड ॥ तेणे भक्ताचि भिडु नु लंघी देसो ॥ ४८ ॥ एव भावार्थ करिता श्रवण ॥ देव होय भक्ता उगाधि  
 न ॥ तेणे भावार्थ करुनि मन ॥ हरि चरण वंदने ॥ ४९ ॥ महूर्त निमिष क्षणक्षण ॥ हरि चरण सुखावत्सामन ॥

करिता उरबद्ध गायन ॥ पाठका दोष न लगे जाण ॥ तेणे निर्द  
 षण माहादोषा ॥ ४० ॥ वेदचे उपनिषद पठण ॥

इतरव्यापारतेणेसुखेजाण सहजेजाणवोसरति ३५० जेणे सुटेमाझेअनुसंधान तेकर्मत्या गावेआ  
 पण जेणेस्वरूपिनिकहोयमन तेसमाधानराखावे ५१ सप्रेमकरितानमन निसन्तुतनसमाधान सा  
 नमनाचेलक्षण लोटागणदुवत ५२ स्फुटल्यादंडसन्नाने स्फुमुखविमुखवाहोनणे तेसीघातीके  
 टगंणे देहअभिमानेअहेतुक ५३ असतादेहाचेअनुसंधान जोपरमार्थकेदिनमन यानमस्कारा  
 चेलक्षण स्वयश्रीकृष्णसांगत ॥५४॥ श्लोक ॥ श्रीरामत्यादयोः कृत्वावाहुभ्यां च परस्परं ॥ प्रपन्नं पा

हिमा मीनाभीतं मूल्युग्रहर्णवाता ॥ ५५ ॥ मसकमाख्याचरणावरि उभयबाहुस्परस्परि दोनिचरणदोही  
 करि धरिनिर्धारिभावार्थे ५५ संसारसागराचापोटि मृत्युग्रेहातकीमिदि चरणित्तागतेउठाउटि  
 मजजगजेठीसोउवि ५६ ११व११ये११यात्कोदारुण यातागीतुजआलोद्वारण निवारिमासेजन्ममरण  
 ११ावेश्रीचरणदुधधरि ५७ तुस्वामिअसतात्रीरि मजबौमृगुवापुडेकेविमारि ११ावेलोटागणचरणावरि  
 कृपाउद्धरि कृपाकुवा ५८ देखोनिसांश्यागनमन ऐकोनिभयभीतस्तवन मजतुळानारायण ऐसे

आपणभावावे ॥५९॥ श्लोक इतिबोधां मयादत्तावीरस्याधाय सादरं ॥ उद्वासयच्चदुःखं ज्योतिर्ज्योति

तिषितस्तुनः ॥ ६० ॥ ॥ प्यादिधत्मात्रोषप्रसाद तोत्रिरिधरोनिस्वानंद स्थावरमूर्तिजिप्रासिद्ध तेथउ  
 दाससमधनकरावा ३६० जंगमजेप्रतिमामूर्ति तेथआवाहीलीनिजात्ममूर्तिज्योति तेउद्दाकृमिया  
 मागुति निजात्मारूपितेवावि ६१ मूर्तिमात्सारिलेज्योति आणोनिगाहृदयस्थीति मगनिजात्मज्योतिसी  
 ज्योति यथास्थीतिमेजवावि ६२ विसर्ज्यानतपूज्यारथीति ऐकोनिउद्धवाचेचिन्ति साधकापूज्यकोण  
 मूर्ति देवतेअर्थीस्वयसांगे ॥६३॥ अर्च्यादिषु यदायत्र श्रद्धामांतत्र चार्चयेत् ॥ सर्वभूतव्याप्तानि च  
 सर्वात्माहमवस्थितः ॥ ६४ ॥ ॥ उद्वाजेमूर्तिज्यापटियेति तेचिगासीपूज्यमूर्ति तुवाहीअनुमात्रचिन्ति

संदेहयेअर्थनिधरावा ६४ विष्णुविरचिसविताजाण शिवशक्ति कागजवदन यामूर्तिमाजीमीआपव  
सर्विसमानसमास ६५ सर्वप्रतिचैपूजन करितामजपूजासमान भक्ताचिजेप्रीतिगहण तियेआधीन  
मीपरमात्मा ६६ जेविवाळकाचेनिमेळे मातातरनुकुलेखेळे तेविभक्तप्रेमाचियलिळे म्याचिकळोळे  
कीडिजे ६७ यासर्वभूताचाराई उगणिआवतारादितीत्मादेही येअर्थानाहीसंदेहो ६८ उद्धवामीना  
हीरसे कोणीहिरिकानरितेनरिते परिप्राण्याचेभाग्यकैसे यामजविश्वासेनभजति ६९ जेजेथम  
जभजोवैसे यामीतथतैसाचिअसे हेउपसनाकांडुविद्योषे गुप्तअनयासेप्रकाशिते ७० उपासनि  
कांडीचानिर्वाहो मीसर्वभूतिदेवाधिदेवो हाज्यासीनकळेमुख्यभावो यासीमूर्तिनिर्वाहोयोतित्मा  
७१ होकामासीप्रतिमामूर्ति तेहीमीचिदात्मानिश्चीति तेथेकरिताभावेभक्ति भक्तकेउरतिउद्धवा ७२  
॥१॥ एवं क्रियायोगपथः पुमान्वैदिकेर्तौत्रिके ॥ विस्तारगोअर्चनुभयतः सिद्धिमतां विरयभीक्षितां ॥  
एवंक्रियायोगतक्षण वैदिकतांत्रीकमिश्रजाण उगमनिगमीविस्तारगहण तेमुख्यार्थसांगीतत्मा ७३  
येणेकीयायोगभजनमार्गे भक्तजैभोगमोक्षमार्गे तेउभयसीद्धीलागीवगे म्याश्रीवगेउमार्पिजे ७४  
भक्तनिःकामअनन्यभक्ति तेभोगमोक्षादिसपत्ति घेउनियाश्रीपति त्याच्याद्वाराप्रतिसदातिथे ७५ ॥श्लो॥  
महाचासंप्रतिष्ठाप्य मरिचं कारयेदृ ॥ पुण्योयानानैरम्याणि पूजायात्रासवाश्रिता न ॥ १० ॥ ७६  
सांगमासीप्रतिमामूर्ति कसनिजेप्रतिष्ठाकरिति दृढदेवात्म्याउभविति अतिप्रीतिमद्भावे ७६ वणउपव  
णउद्यान पूस्पवटिकात्मवाव्यापूर्ण नित्यपूजेचेविधान उत्साहीजाणमहपूज्या ७७ यात्राबहुजनसमा  
जा वार्षिकपूर्वमहापूज्या चाल्मवयाअभोक्षजा उपायसहजाहरिसांगे ७८ ॥श्लो॥ पूजादीनांप्र  
७९ ॥ महापूर्वस्वथान्वहे ॥ श्रेत्रापणपुरग्यामानुदत्ता मत्स्यारि पानियात ॥ ११ ॥ ७९ ॥  
नित्यपूज्यामहापूज्या वार्षिकपूज्याचाल्मवयावोजो निसनिर्वाकरिसाजा प्रामसमाजी उमार्पति ७९  
श्रेत्रलक्षणीजेत्रोतगहन हाटउसन्नद्रव्य आपण होटविणतोम्यामजाण ऐकलक्षणपुराचे ८०

हाय युक्तते पूरपाही जे आर्षिती देवा लई ते मासे ऐ स्वयं पाही सर्वाथ ई पावति ८१ मूर्तिप्रतिष्ठा  
 पूजाविधान देवा लयी के लीया जाण कस्युसी फळ कोण कोण ते ही श्री कृष्ण सांगत ॥ ८२ ॥ श्लोक ॥ प्रतिष्ठ  
 या सार्वभौमं दानेन भुवने त्रयं ॥ पूजादिना व्रत लोके त्रिभिर्वत्सा म्यता मियात् ॥ ४२ ॥ टीका ॥  
 जो मूर्तिप्रतिष्ठा करुनि राये तो सार्वभौम राज्य पावे जो देवा लय करि स्वये तो स्वामी होय ति ही लोकी  
 ८३ जो करि पूजा विधान तो पावे व्रत सदन येती निजो करि आपण तो मज समान ऐ स्वयं पावे ८४ ऐ  
 से हे ति घे साधक पोरि हुनि सकामुक्त कामने सारखे लोक ते आवश्यक पावति ८५ ज्यासी मासे नीष्काम  
 भजन याचे प्राप्तीचे निज लक्षण ते आख्या रे श्री कृष्ण स्वानंद पूर्ण सांगत ॥ ८६ ॥ श्लोक ॥ मामेव नैरपेक्ष  
 ण भक्तियोगेन विंदति ॥ भक्तियोगं सत्त्वभते एवं यः पूजयेत्त मां ॥ ४३ ॥ टीका ॥  
 मज मुख्य वे जी विधरुन ज्यासी मासे नीष्काम भजन निष्कामता जे अनन्य ते पुरुष जाण मी ही ति ८७  
 तो वर्तमान दे ही असता मासे निरूपण होय तत्वा त्या आह्या उक्तीता भेद सर्वथा असेना ८८ करितानि  
 ष्काम भजन भक्त सात्त्विक मज समान समान ह्यणा वया जाण वेगळ पण असेना ८९ एवं भक्त जो मज भीत  
 रि मी भक्ता आत बोहरि ऐसे मिळाले पें स्परी निज भक्ता वरी नांदत ३९ मुळ जे विमोडियेसी काकल्लोक  
 जे सागरासी ऐरी या निज भक्ति पासी आह्या तया सी रडी वास ९१ ऐसी निष्काम जो भक्ति करि तो धन्य  
 धन्य चराचरि जो देवा दी जाचि वृत्ति हरि तो पंच उगाघोरित ऐक ॥ ९२ ॥ श्लोक ॥ यः स्वदत्तां परै र्दत्तां हरेत्त स  
 रविप्रयोः ॥ वृत्तिस जायते विदुः क्व घर्षाणाम युता युत ॥ ९४ ॥ कर्तुं श्य सार्थे हं तौरतु मोरित एव च  
 ॥ कमहृणां भागिनः प्रेत्य मृत्यो भूयसित फले ॥ ९५ ॥ टीका ॥  
 जो देवा लयाचि वृत्ति हरि जो ब्राह्मण वृत्ति चा लोप करी तो आयुता युत सै हंसी वर्षे योनि शुकरि विद्या जोगी ९३

र

जो देव ही जाचि वृत्ति हरि ल्यासी जो होय साहा कीरि का जो आनु मोदन करि ते ती घे आघोरि पचिजे ती १४  
 ते जन्म मरणाचा आवर्ति तेचि कळपुढतापुढति भोग भोगीति जाणनिश्चीति उद्ग १५ मासी प्रासी  
 चिचाडचिन्ता तरिनात चावि अधर्मता अधर्मवंताची कथा स्वभावे सर्वथान करावि १६ नेदेखावे शर्व  
 दर्शन भूतमात्राचोदषजाणै नबोलावे वर्मस्पर्शन सर्वथा जाणन करावो १७ नायकाविपरनिंदा न  
 बालोवे परायवादा अधर्माचिया संवादा कोणासी कदान मीळावे १८ त्रैलोक्ये पाप असंके ज्यास असे  
 १९ अवश्ये तेसाधुनिंदा निजमुखे येथारुखे करावि २० सकळ दुःखाचिया रासी अवशायवया मजपासी  
 ऐसी आवडी ज्याचे मानसी तेणे ब्रह्मदेवासी करावे ४०० सकळ वृथा जाका ऐसे आवडे ज्याचे जीवा तेणे सा  
 रिपाठादि आधवा खेळमांडवा अहीनिंसी १ मीहृदस्य आलाराम स्वतसी इपरब्रह्म तोमी होवया दुर्गम  
 अधर्म कर्म जगासी २ तेनिर्दोषवया कर्म कर्म वणितो हेगा अतिसूगम अंग स्वडस्मरावे रामनाम पु  
 रूषोत्तम अच्युत ३ जेथ हरिनामाचा गजर तेथ कर्म कर्मचि संभार जाळुनि नुरवि भस्मसार ऐसे नाम  
 पवित्र हरिचे ४ नामनिर्दोषी पापसमत हे सकळ शास्त्रसमत जो विकल्म मानियथ तो जाणनिश्ची  
 तव ज्ञे पाणी ५ वज्रपापाचे पर्वत निर्दोषी श्री महाभागवत ते जनार्दन कृपायेथ सातोः प्राप्त अनायासे  
 हे ते भागवतिचा पाहाता अर्थ हरिचे नाम अतिसमर्थ वणितो हे परमाद्भुत स्वमुखे अच्युत बोलीला ७  
 येथ ही जो विकल्म धरि तो अति अभाग्य संसारि महादुःख रोषसागारि विल्ल करि घुडाता ८ सकल्मे विक  
 ल्मे जाण जनासी साते दृढ बधन त्याभव बधाचे छेदन जनार्दन निजनाम ९ जनार्दचे निजनाम नि  
 र्दोषी भवय परम ते नाम मरे जो सप्रेम तो पुरुषोत्तम स्वये होय ४१० येणे होय ब्रह्मपूर्ण ये अर्थ चि गोड

येणे

निरूपण ॥ आद्याविसावे उाध्यायी जाण ॥ उद्धवा श्रीकृष्णसांगत ॥ ११ ॥ ते कथाजै श्रवणपडे ॥ ते जी  
 वी स्वयंभू रूखवोट ॥ मग उत वोहर दोही कडे ॥ करिवोडे कोडे समसाम्य ॥ १२ ॥ जे कथेचे गोउपण ॥ जीवगेत्मान  
 सोडी जाण ॥ ऐसेर साळनिरूपण ॥ उद्धवासी श्रीकृष्णसांगेल ॥ १३ ॥ श्रवणे उपजे ब्रह्मभावो ॥ तो हा उाद्याविसा  
 वा आध्यायो ॥ उद्धवासी दिवादिदेवो ॥ निजकूपे पा हा हो सांगेल ॥ १४ ॥ आक्षरे भरोनि अक्षरौसी ॥ देवसांगत उद्ध  
 वासी ॥ ते निरूपण आद्याविसावें चौथी ॥ ब्रह्मरूखेसी लमडे ल ॥ १५ ॥ ब्रह्मरूखाचिसारवण ॥ तो हा उाद्यावि  
 सावा जाण ॥ उघडुनिया उार्थ उापण ॥ उद्धवासी श्रीकृष्णसांगेल ॥ १६ ॥ कृष्ण उद्धवनिजक्षान ॥ एकाविणवि  
 जनार्दन ॥ तुझे कूपे करुनि पूर्ण ॥ श्रोता आवधानमजयावे ॥ १७ ॥ श्रोतादिधल्मा आवधान ॥ ग्रंथी उल्कासे  
 निरूपण ॥ एका जनार्दना शरण ॥ निरिचरणवंदिते ॥ ४१८ ॥ ॥ इति श्रीमद्भागवतमहापुराणे एका  
 द्वा संध्ये श्रीकृष्ण उद्धवसंवादे एकाकारटिकायां सत्यविज्ञोध्यायः ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

२

सा

॥ मूलश्लोक ॥ ५९ ॥ उाध्या ॥ ४१८ ॥ ॥ एकून संख्या ॥ ४५३ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ६९ ॥